an>

Title: Need to provide free sanitary napkins to women to boost female health and hygiene in the country.

श्री धनंजय महाडीक (कोल्हापुर): महोदय, हमारे भारत देश की महिलाओं की आबादी तकरीबन 61 करोड़ है। स्वच्छता संबंधी शारीरिक सुरक्षा हर औरत का अधिकार है। ए.सी. नेल्सन के सर्वे के अनुसार 12 प्रतिशत महिलाएं मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता संबंधी सैनिटरी नैपकिन (Sanitary Napkins) का प्रयोग करती हैं। बाकी 88 प्रतिशत महिलाएं कपड़ा, राख या भूसा इस्तेमाल करती हैं। यह एक कड़वी सच्चाई है। इस तरह के विकल्प का इस्तेमाल करने की वजह से 70 प्रतिशत महिलाओं में प्रजनन संबंधी संक्रमण का खतरा मंडराता रहता है। सर्वाइकल कैंसर जैसी बीमारी से 72 हजार से भी ज्यादा महिलाओं की मौत हर साल भारत में होती है। इस तरह मासिक धर्म के दौरान मलिनता की वजह से स्कूली छात्राओं को 4 से 5 दिन स्कूल मिस करना पड़ता है। सर्वे के अनुसार 23 प्रतिशत से अधिक लड़कियां मासिक धर्म शुरू होने के बाद स्कूल छोड़ देती हैं। इसकी वजह है मासिक धर्म के दौरान सही तरीके से मलिनता की रोकथाम करने वाली साफ-सुथरी नैपकिन का प्रयोग न करना। साफ-सुथरी नैपकिन का उपयोग न करने की सबसे बड़ी वजह है 70 प्रतिशत महिलाएं इसका खर्च नहीं उठा सकती हैं जिसकी वजह से उन्हें बीमारियां हो जाती हैं और स्कूल छोड़ना पड़ता है। साफ-सुथरी और उचित नैपकिन का प्रयोग नहीं करने की वजह से नौकरी या रोजगार करने वाली महिलाएं 2 से 3 दिन काम नहीं कर सकती हैं।

97 प्रतिशत स्त्री रोग विशेषज्ञ यह मानते हैं कि मासिक धर्म के दौरान साफ-सुथरी नैपकिन का उपयोग करने से सर्वाइकल कैंसर और प्रजनन संबंधी संक्रमण (Reproductive Tract Infection) जैसी बीमारियों से महिलाएं बच सकती हैं।

अत: सदन के माध्यम से मेरा सरकार से अनुरोध है कि जिस तरह तमिलनाडु, कर्नाटक और गोवा सरकार अपने-अपने राज्य में महिलाओं के लिए मुफ्त में साफ-सुथरी सैनिटरी नैपकिन देती हैं, उसी तरह अन्य राज्यों में भी इसका नि:शुल्क वितरण हो। 'सबला योजना' के तहत 0.006 महिलाओं को इसका लाभ मिलता है जो पर्याप्त नहीं है।